



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-2 Shalok-9 |श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो-श्लोक नौ| PDF

अध्याय 2 –सांख्य योग

श्लोक 9

सञ्जय उवाच ।

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ 9॥

सरल हिंदी में भावार्थ:

संजय ने कहा—

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण (हृषीकेश) से अपने मन की बात कहकर, नींद पर विजय पाने वाले अर्जुन (गुडाकेश), जो शत्रुओं का दमन करने वाला पराक्रमी योद्धा था, भगवान् गोविन्द से यह कहकर कि “मैं युद्ध नहीं करूँगा”, मौन होकर बैठ गया।



विस्तृत व्याख्या:

इस श्लोक में संजय धृतराष्ट्र को अर्जुन की उस अवस्था का वर्णन करता है, जिसमें वह अपने मन का सम्पूर्ण भाव भगवान श्रीकृष्ण के सामने व्यक्त कर चुका है।

अर्जुन ने अपने भय, शोक, करुणा और मानसिक द्वंद्व को शब्दों में प्रकट कर दिया। उसने स्पष्ट रूप से कह दिया कि वह युद्ध नहीं करेगा। इतना कहने के बाद अर्जुन के पास अब कहने को कुछ भी शेष नहीं रह गया, इसलिए वह मौन हो गया।

यह मौन केवल शब्दों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह अर्जुन की गहरी मानसिक थकान, असमंजस और भीतर के संघर्ष को दर्शाता है। वह अपने जीवन के सबसे कठिन निर्णय के मोड़ पर खड़ा है।

यह श्लोक यह भी दर्शाता है कि अर्जुन अभी पूर्ण रूप से शरणागत नहीं हुआ है, बल्कि वह अपनी बात रखकर ठहर गया है। अब आगे भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश प्रारंभ होने वाला है।

पदों का भावार्थ:

सञ्जय उवाच –
संजय ने कहा।

एवम् उक्त्वा हृषीकेशम् –
इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण से कहकर।



गुडाकेशः परन्तपः –

नींद को जीतने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला अर्जुन।

न योत्स्य इति गोविन्दम् उक्त्वा –

“मैं युद्ध नहीं करूँगा” ऐसा भगवान गोविन्द से कहकर।

तूष्णीं बभूव ह –

वह मौन होकर बैठ गया।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थः

इस श्लोक में मनुष्य की उस स्थिति का चित्रण है, जब वह अपने दुःख, भय और उलझनों को व्यक्त कर देने के बाद भीतर से खाली-सा हो जाता है।

अर्जुन का मौन यह संकेत देता है कि—

- वह अपने अहं और तर्क की सीमा तक बोल चुका है
- अब उसके पास स्वयं कोई समाधान नहीं है
- उसके भीतर शून्यता और प्रतीक्षा की अवस्था उत्पन्न हो गई है

आध्यात्मिक दृष्टि से यह मौन ही आगे आने वाले दिव्य ज्ञान का द्वार है। जब व्यक्ति अपने विचारों और अहं को शांत कर देता है, तभी गुरु का उपदेश हृदय में उतरता है।



RELATED ARTICLE



Chapter -2 Shalok – 7



Chapter -2 Shalok – 8



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

